यज्ञ की अवधारणा समाज और प्रकृति के बीच सहयोग को कैसे बढ़ावा दे सकती है?

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 4823 **L**

Unique Paper Code : 6967000031

Name of the Paper : The Gita for Sustainable Universe

Name of the Course : **VAC**

Semester : II / IV

Duration : 1 Hour | Maximum Marks : 30

समय : 1 घण्टा | पूर्णांक : 30

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. **First** question is compulsory and attempt any **two** questions from remaining.
3. Each question carries **10** marks.
4. Answers may be written either in English or Hindi; but the same medium should be used throughout the paper.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **पहला प्रश्न अनिवार्य है और शेष में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।**
3. **प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है ।**
4. **इस प्रश्न-पत्र का उत्तर अंग्रेजी या हिंदी किसी एक भाषा में दीजिए, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए ।**

1. Write short notes on **any two** of the following : (5+5=10)

   (i) Devata as powers of nature

   (ii) Conservation as a moral duty

   (iii) Simplicity as a value for sustainability

   निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी कीजिए :

   (i) प्रकृति की शक्तियों के रूप में देवता

   (ii) नैतिक कर्तव्य के रूप में संरक्षण

   (iii) सततता के लिए सादगी एक मूल्य

2. Explain how the Gita presents nature as a giver and human beings as caretakers. (10)

   गीता प्रकृति को दाता और मानव को संरक्षक के रूप में कैसे प्रस्तुत करती है? स्पष्ट कीजिए।

3. "*Sustainability begins with control over desire.*" Discuss this statement in the light of the Gita. (10)

   "*सततता की शुरुआत इच्छाओं पर-नियत्रण से होती है।*" गीता के प्रकाश में इस कथन पर चर्चा कीजिए।

4. How can the idea of Yajna promote cooperation between society and nature? (10)